'चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी वर्ष' के सुअवसर पर आयोजित स्वतंत्रता–सेनानी सम्मान समारोह में महामहिम राज्यपाल, श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

(दिनांक–17.04.2017, समय–पूर्वाह्न–12:30 बजे,स्थान–एस॰के॰ मेमोरियल हॉल, पटना)

^चम्पारण–सत्याग्रह–शताब्दी–वर्ष' के सुअवसर पर आयोजित स्वतंत्रता–सेनानी– सम्मान–समारोह में उपस्थित माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी जी, मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी, बिहार सरकार के मंत्रिगण, मंच पर उपस्थित सभी नेतागण, समारोह में उपस्थित आदरणीय स्वतंत्रता–सेनानीगण, गाँधी–दर्शन से जुड़े विचारकगण, अतिथिगण, मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीजी के नेतृत्व में हुए 'चम्पारण सत्याग्रह' के शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत स्वतंत्रता–सेनानियों के सम्मान में आयोजित इस कार्यक्रम में पधारे हुए माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी जी का मैं हार्दिक अभिनन्दन एवं स्वागत करता हूँ। माननीय राष्ट्रपति जी बिहारवासियों के प्रति काफी स्नेह का भाव रखते हैं। पिछले दो महीने के अन्दर राष्ट्रपति जी हम सबके आमंत्रण पर चौथी बार बिहार आए हैं। हम सब जब भी इन्हें आदरपूर्वक याद करते हैं, ये हमारे बीच आने के लिए सहज रूप से अपनी स्वीकृति प्रदान कर देते हैं। आज की राष्ट्रपति जी की यात्रा तो सचमुच एक ऐतिहासिक यात्रा है। स्वतंत्रता–आन्दोलन की एक ऐतिहासिक परिघटना के शताब्दी वर्ष में स्वतंत्रता–सेनानियों को सम्मानित करने के उद्देश्य से इनका यहाँ पहुँचना हम सबके लिए गौरव और प्रसन्नता की बात है। हम सभी माननीय राष्ट्रपति जी के प्रति अत्यन्त आभारी हैं।

गाँधीजी का 'चम्पारण–सत्याग्रह' भारतीय स्वतंत्रता–आंदोलन में 'गाँधी युग' की शुरूआत माना जाता है। बिहार में चम्पारण जिले को ही यह सौभाग्य प्राप्त है कि दक्षिण अफ्रीका से वापस आकर महात्मा गाँधी ने सर्वप्रथम 'सत्याग्रह–आंदोलन' का बिगुल यहीं फूंका।

मोहनदास करमचन्द गाँधी जी को महात्मा बनानेवाली बिहार की चम्पारण की ही पवित्र भूमि है।

आज के ठीक सौ साल पहले गाँधीजी द्वारा 1917 ई॰ में संचालित 'चंपारण सत्याग्रह आन्दोलन' न सिर्फ भारतीय इतिहास, बल्कि विश्व इतिहास की एक ऐसी घटना है, जिसने ब्रिटिश साम्राज्यवाद को खुली चुनौती दी थी। वे 10 अप्रैल, 1917 को जब बिहार आए, तो उनका एक मात्र मकसद चंपारण के किसानों की समस्याओं को समझना, उनका निदान करना और नील के धब्बों को मिटाना था। एक स्थानीय पीड़ित किसान श्री राजकुमार शुक्ल ने कांग्रेस के 'लखनऊ अधिवेशन' में अंग्रेजों द्वारा जबरन नील की खेती कराये जाने के संदर्भ में गाँधीजी से शिकायत की थी। शुक्ल जी का आग्रह था कि गाँधीजी इस आंदोलन का नेतृत्व करें।

'चम्पारण आन्दोलन' भारत के स्वतंत्रता–संग्राम का एक अद्वितीय अध्याय रहा है। इतिहासकार इसे जंगे–आजादी के इतिहास में 'मील का पत्थर' बताते हैं।

अपनी 'आत्मकथा' में गाँधीजी ने लिखा है कि–''यह अक्षरशः सत्य है कि मैंने चम्पारण में ईश्वर का, अहिंसा का और सत्य का साक्षात्कार किया। जब मैं इस साक्षात्कार के अपने अधिकार की जाँच करता हूँ तो मुझे वहाँ के लोगों के प्रति अपने प्रेम के सिवा कुछ भी नही मिलता। चम्पारण के वे दिन मेरे जीवन में कभी न भूलने जैसे हैं। मेरे लिए और किसानों के लिए ये उत्सव के दिन थे।'' बाद में, गाँधीजी ने मीरा बेन को सन् 1927 में लिखे अपने एक पत्र में भी स्वीकार किया कि– "Champaran has sacred memories for me. Champaran really introduced me to India." गाँधीजी ने स्वयं लिखा है–''चम्पारण सत्याग्रह से पहले भारत में मुझे कौन जानता था? अफ्रीका में 20 वर्ष बिताने के बाद मैं भारत लौटा

और चम्पारण आया। इसके बाद मेरे साथ पूरा देश जग उठा। इससे पहले मैं चम्पारण को नहीं जानता था। परन्तु जब मैं चम्पारण आया तो मुझे लगा कि मैं बिहार के लोगों को सदियों से जानता हूँ और वे भी मुझे गहराई से जानते हैं। यह बिहार है, जिसने पूरे भारतवर्ष को गाँधी का परिचय दिया।'' गाँधीजी के इन शब्दों से 'चम्पारण– आन्दोलन' की महत्ता स्वतः प्रमाणित हो जाती है।

मुझे प्रसन्नता है कि राज्य सरकार ने 'चम्पारण–सत्याग्रह' के शताब्दी वर्ष को व्यापक रूप से आयोजित करने का निर्णय लिया है। विगत 10 अप्रैल से इसकी शुरूआत हो चुकी है। राजधानी पटना, मुजफ्फरपुर, बेतिया ही नहीं, पूरे बिहार में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के जीवन–दर्शन पर आधारित कतिपय कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी ने इसके बारे में विस्तार से आप सबको जानकारी दी है। आज पूरे देश से स्वतंत्रता– सेनानियों को सादर आमंत्रित कर हम उन्हें सम्मानित करने जा रहे हैं, यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। मैं उपस्थित सभी स्वतंत्रता–सेनानियों का सादर अभिनन्दन करता हूँ।

आइये, हम सभी 'चम्पारण सत्याग्रह' के शताब्दी–वर्ष के आयोजन के क्रम में इस बात के लिए दृढ़संकल्पित हों कि हम एक सम्पन्न और सशक्त भारतवर्ष के स्वर्णिम भविष्य के लिए अपने सामूहिक प्रयास और तेज करेंगे तथा भारतीय संविधान और कानून की सर्वोच्चता और मर्यादा की रक्षा हर कीमत पर करेंगे। हम एक ऐसे खुशहाल और शांतिपूर्ण भारतवर्ष का नवनिर्माण करेंगे, जहाँ सबको न्यायपूर्वक विकास के समान अवसर उपलब्ध होंगे। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।